कृषि विज्ञान केन्द्र

गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चूरू (राज.)

ई–न्यूज लेटर

दिसम्बर, 2024, अंक 8

मेथी उत्पादन की उन्नत तकनीक विषय पर एक दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा अनुसूचित जाति उप योजना (SCSP) के अन्तर्गत मेथी की उन्नत खेती विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 13.11.2024 को किया गया, जिसमें 20 कृषक एवं कृषक महिलाओं ने भाग लिया । प्रशिक्षण के दौरान केन्द्र के विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान विज्ञान) श्री अजय कुमावत द्वारा जिले के अनुरूप उपयुक्त मेथी की किस्मों, बीज बुवाई, बीज उपचार, खाद एवं उर्वरक प्रबंधन तथा एकीकृत कीट नियंत्रण की विस्तारपूर्वक जानकारी दी साथ ही किसानों को अधिक उत्पादन लेने हेतु समय–समय पर अन्तर सस्य क्रियाओं को करने का अभ्यास करवाया । निकरा परियोजना अन्तर्गत भी केन्द्र द्वारा मेथी की उत्पादन तकनीक विषय पर एक दिवसीय असंस्थागत प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 18.11.2024 को ग्राम मीतासर तह. सरदारशहर में किया गया । इस प्रशिक्षण के अन्तर्गत 20 प्रगतिशील कृषकों ने भाग लिया । कार्यक्रम अर्न्तगत मेथी की उन्नत किस्मों एवं समन्वित उत्पादक तकनीक (बीज एवं नियंत्रण) बिन्दुओं पर विस्तारपूवर्क जानकारी दी गई ।

गेहूँ उत्पादन की उन्नत तकनीकी विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन

केन्द्र द्वारा दिनांक 13 नवम्बर 2024 को जैव सवंर्धित गेहूँ उत्पादन को बढाने हेतु प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें रतनगढ तहसील के ग्राम देवीपुरा की कृषक महिलाओं एवं सरदारशहर तहसील के गांव बरलाजसर की कृषक महिलाओं ने भाग लिया । प्रशिक्षण के अन्तर्गत डॉ. रमन जोधा ने जैव सवंर्धित गेहूँ की किस्म **DBW-187** (करण वंदना) के विभिन्न पोषक घटकों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी तथा सस्य वैज्ञानिक श्री हरीश कुमार रछौया ने गेहूँ उत्पादन की तकनीक को बताते हुए बुवाई से पूर्व भूमि एवं बीज उपचार, खाद व उर्वरक प्रबंधन खरपतवार प्रबंधन एवं एकीकृत कीट व रोग प्रबंधन की विस्तारपूर्वक जानकारी दी । प्रशिक्षण उपरान्त जैव संवतिर्धत गेहूँ के 25 प्रदर्शन भी उपलब्ध करवाये गये ।

ईसबगोल में पोषक तत्व प्रबंधन हेतु प्रक्षेत्र अनुसंधान

दिनांक 14.11.2024 को ग्राम पूलासर में ईसबगोल की फसल में बुवाई से पूर्व उचित पोषक तत्व प्रबंधन को ध्यान में रखते हुए उपज को बढाने के साथ ही हानिकारक फंफूद से फसल को बचाने हेतु प्रक्षैत्र अनुसंधान के 10 ट्रायल लगाये गये । पोषक तत्व प्रबंधन हेतु किसानों को मृदा परीक्षण के अनुसार ईसबगोल में जिंक सल्फेट का 10 किलो/प्रति है. की दर से बुवाई से पूर्व खेत की तैयारी के समय उपयोग करने एवं प्राप्त परिणामों के मूल्यांकन के पश्चात जिंक के उपयोग के प्रभाव के आंकलन पर सभी 10 कृषकों ने सहमति प्रदान की ।

बूंद–बूंद सिंचाई तकनीक का प्रदर्शन

निकरा परियोजना के अन्तर्गत कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा दिनांक 18.11.2024 को बूंद–बूंद सिंचाई तकनीक के प्रदर्शन ग्राम मीतासर तह. सरदारशहर में कुल 04 प्रगतिशील कृषकों के खेत पर लगाये गये । केन्द्र के विशेषज्ञ श्री अजय कुमावत ने सिंचाई जल के महत्व एवं दक्षतापूर्ण उपयोग की विधियों के बारे में विस्तृत चर्चा करते हुए बूंद–बूंद सिंचाई तकनीक द्वारा सब्जी उत्पादन करते हुए कम पानी में अधिक उत्पादन के महत्व को बताया ।

रेडियो वार्ता कार्यक्रम

दिनांक 19.11.2024 को कृषि विज्ञान केन्द्र विषय वस्तु विशेषज्ञ श्री हरीश कुमार रछौया द्वारा जौ की उन्नत खेती विषय पर आकाशवाणी चूरू से रेडियो वार्ता के द्वारा किसानों को संबोधित कर विस्तृत जानकारी दी गई ।

जिला स्तरीय निगरानी समिति (DMC) :कृषक उत्पादक संगठन, चूरू के अन्तर्गत बैठक का आयोजन

दिनांक 19.11.2024 को जिला परिषद्, चूरू में जिला कलेक्टर श्रीमान् अभिषेक सुराणा की अध्यक्षता में जिला स्तरीय निगरानी समिति (DMC) का आयोजन किया गया । इस बैठक में सी.ई.ओ. जिला परिषद्, चूरू, कृषि विज्ञान केन्द्र, अग्रणी जिला प्रबंधक, जे.डी.ए.एच., ए.एफ.डी.ओ., मतस्य विभाग, सी.बी.बी.ओ, सहायक निदेशक कृषि, चूरू पी.डी. आत्मा, चूरू, ए.जी.एम.–नाबार्ड, चूरू एवं जिले के समस्त कृषक उत्पादक संगठनों के नामित सदस्यों ने भाग लिया । जिले में कृषक संगठनों (FPOs) उनकी कार्य प्रणाली व प्रगति विवरण के बारे में विस्तृत चर्चा की गई व कृषक उत्पादक संगठनों को श्रेष्ट कार्य करने के लिये निर्देशित किया गया ।

कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र पर दिनांक 19–20 नवम्बर 2024 को दो दिवसीय कृषक वैज्ञानिक संवाद (रबी 2024–25) का आयोजन किया गया । इस कृषक वैज्ञानिक संवाद में आत्मा प्रोजेक्ट डायरेक्टर श्रीमान् दीपक कपिला तथा कृषि विज्ञान केन्द्र के सभी वैज्ञानिकों ने जिले के 25 कृषक व कृषक महिलाओं के साथ संवाद किया । इस दौरान रबी मौसम की फसलों में उर्वरक, बीजोपचार, कीट व रोग प्रबंधन तथा मूल्य सवंर्धन संबंधित पहलुओ के बारे में विस्तृत चर्चा की गई । केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. वी.के.सैनी ने भारत सरकार द्वारा किसानों के हितार्थ में चलाई जा रही समस्त योजनाओं व मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक प्रबंधन के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया ।

ऊँट सरंक्षण संगोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 23.11.24 को कृषि विज्ञान केन्द्र, गांधी विद्या मंदिर के सभागार में चूरू जिला कलेक्टर श्रीमान् अभिषेक सुराणा की अध्यक्षता में पशुपालन विभाग एवं कृषि विज्ञान केन्द्र व के संयुक्त तत्वावधान में एक संगोष्ठी का आयोजन चूरू जिले के ऊँटपालकों के साथ किया गया । केन्द्र के डॉ. वी.के.सैनी ने आगन्तुकों का स्वागत किया व केन्द्र की विभिन्न प्रदर्शन ईकाईयों का भ्रमण कराया । राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर के मुख्य तकनीकी अधिकारी श्री काशीनाथ ने संबोधन में ऊँटनी के दूध की पोषण उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि दूध में पाये जाने वाला लेक्टोफेरिन नामक तत्व कैंसर जैसी बीमारी से लडने में सहायक है, साथ ही दूध में

इन्सुलिन मौजूद रहता है जो कि डायबिटीज मरीजों के लिए वरदान साबित हो रहा है । पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. ओमप्रकाश ने बताया कि जिले में 2019 की गणना के अनुसार 19551 ही ऊँट चूरू जिले में बचे है । ऊँट पालन के नये आयामों के माध्यम से ऊँटपालको की आय बढाने के लिए योजना बनाकर काम किया जा रहा है ।

वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. निरंजन चिरानियां ने ऊँटपालकों को ऊँटनी के दूध के रख रखाव व विक्रय के बारे में जानकारी दी व ऊँट के सरंक्षण के लिए कार्य योजना के बारे में बताया । संवाद के दौरान ऊँटपालकों ने सुझाया कि ऊँटपालकों को ऋण व किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से जोडा जाये तो ऊँटों का सरंक्षण हो सकता है । कार्यक्रम के दौरान चूरू जिला दुग्ध उत्पादक सहकार संघ के एम.डी. श्री जितेन्द्र सिंह ने दुग्ध उत्पादक संघ के माध्यम से ऊँटनी का दूध इकट्ठा कर डेयरी के चिलिंग प्लांट में एकत्रित कर यहां से प्रोसेसिंग के बाद संबंधित विपणन एजेन्सी व अस्पतालों को भेजने हेतु पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया ।

ऊँटपालकों को जिला कलेक्टर महोदय ने ऊँटनी के दूध एवं उससे बनने वाले उत्पादों तथा ऊँट के गोबर से कम्पोस्ट बनाकर उपयोग करने हेतु ऊँटपालकों को प्रेरित किया साथ ही कोपरेटिव बनाने का सुझाव दिया ताकि दूध का एकत्रीकरण कर दूध डेयरी तक पहुँचा कर उसका सही उपयोग हो सके और ऊँटपालकों की आजीविका में सुधार के साथ–साथ ऊँटों का सरंक्षण किया जा सके ।

गांधी विद्या मंदिर के अध्यक्ष श्रीमान् हिमांशु दूगड ने इस कार्यक्रम को बढावा देने के लिए अपनी और से यथा संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया । कार्यक्रम में जिले के 141 ऊँट पालक एवं अन्य कृषकों, कार्मिकों, जनप्रतिनिधियों आदि कुल 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया । कार्यक्रम के सफल आयोजन उपरान्त सभी आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया ।

कृषि विस्तार सेवाओं के तहत एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स शुरू

कृषि विज्ञान केन्द्र में गुरूवार दिनांक 28.11.2024 को कृषि आदान विक्रेताओं के लिए कृषि विस्तार सेवाओं के तहत एक वर्षीय डिप्लोमा का शुभारंभ किया गया । गांधी विद्या मंदिर के माननीय अध्यक्ष श्री हिमांशु दूगड की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम में मुख्य अतिथि संयुक्त निदेशक (कृषि विस्तार) डॉ. जगदेवसिंह थे, विशिष्ठ अतिथि राज्य DAESI समन्वयक एस.एस. राजावत, जयपुर व परियोजना निदेशक आत्मा, चूरू के श्री दीपक कपिला, गांधी विद्या मंदिर के सचिव श्री अजयपति त्रिपाठी, कोर्स का संचालन फेसीलिटेटर श्री सुरेश भाटी द्वारा किया जावेगा ।

संयुक्त निदेशक डॉ. जगदेवसिंह ने बताया कि यह डिप्लोमा कृषि आदान विक्रेताओं के लिए बहुत ही मददगार साबित होगा । डिप्लोमा कोर्स में कुल 48 दिन कक्षाएं, 40 सैद्वान्तिक व आठ दिन प्रायोगिक व भ्रमण करवाया जायेगा । आत्मा उप निदेशक श्री कपिला ने बताया कि इसके तहत विभिन्न विषयों कृषि, जलवायु, मृदा विज्ञान, उद्यान विज्ञान, प्रक्षेत्र मशीनरी, कीट व रोग विज्ञान, कृषक हितेषी शासन की योजनाओं सहित अन्य जानकारी दी जायेगी । अन्त में केन्द्र वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. वी.के.सैनी ने केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी सांझा की व आगन्तुक सभी मेहमानों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

दिसम्बर माह में किये जाने वाले कृषि संबंधित कार्य

1. जिन किसानों ने गेहूँ व जौ की बुवाई अभी तक नहीं की है, जल्दी से जल्दी से बुवाई दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक पूर्ण करें तथा बीज को कार्बनडाजिम 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।

2. गेहूँ की पछेती किस्मों राज.3077, राज. 3777, राज.4037 व राज. 1482 की बुवाई करें । बीज की मात्रा 100 किलो प्रति हैक्टेयर रखें ।

3. जौ की बुवाई हेतु आर.डी. 2715, आर.डी.2552 और आर.डी.2899 उन्नत किस्मों की बुवाई करें । बुवाई हेतु 100 किलो बीज/हैक्टेयर की दर से उपयोग में लेवें । दीमक प्रबंधन हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 3 मिली/किलोग्राम बीज से उपचारित करके बिजाई करें ।

4. सरसों में 30–35 दिन की फसल पर सिंचाई करें तथा इसी समय 30 किलो नत्रजन/हैक्टेयर की दर से देवें ।

संकलनकर्ता	संपादक	प्रकाशक
श्री मुकेश शर्मा (पौध सरंक्षण विशेषज्ञ) श्री हरीशकुमार रछौया (फसल उत्पादन विशेषज्ञ) श्री श्याम बिहारी (पशुपालन विशेषज्ञ) श्री अजय कुमावत (बागवानी विशेषज्ञ) श्री रमेश चौधरी (वरिष्ठ अनुसन्धान अध्येता-NICRA)	डॉ. रमन जोधा (विषय वस्तु विशेषज्ञ गृह विज्ञान) **Designed** श्री सुनील कुमार वी.वी.,स्टैनो **Typed** श्री ओ.पी.शर्मा, टाइपिस्ट	डॉ. वी. के. सैनी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर,चूरू–I